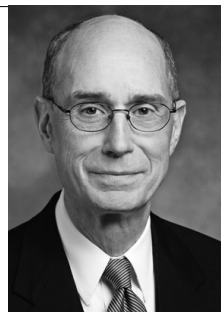

अध्यक्ष हेनरी बी. आइरिंग द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार

विश्वास की प्रार्थना

प्रार्थना परमेश्वर से बोले गए शब्दों से अधिक है । यह परमेश्वर और उसके बच्चों के बीच में दो-तरफा बातचीत होती है ।

जब प्रार्थना उस तरह से काम करती है जैसा उसे करना चाहिए, हम सरल शब्दों में अपने मन की अनुभूतियों को व्यक्त करते हैं । स्वर्गीय पिता उत्तरों को प्रतीकात्मकरूप में हमारे मनों में विचारों को अनुभूतियों के साथ डालते हैं । वे सैदव हमारी सच्ची प्रार्थना को सुनते हैं जब हम दृढ़ता के साथ उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए प्रार्थना करते हैं, चाहे उनका उत्तर कुछ भी हो और वह कभी भी आये ।

प्रभु उन सभी से यह वादा करता है जो मॉरमन की पुस्तक को पढ़ते और इसके विषय में प्रार्थना करते हैं :

''और जब तुम इन बातों को स्वीकार करोगे, मैं तुम्हें उपदेश देना चाहता हूं कि तुम मसीह के नाम में, अनंत पिता, परमेश्वर से पूछो, कि क्या ये बातें सच्ची नहीं; और यदि तुम सच्चे हृदय के साथ, वास्तविक उद्देश्य से मसीह में विश्वास करते हुए पूछोगे, तो वह पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा तुम पर इसकी सच्चाई प्रकट करेगा ।

''और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा तुम सारी बातों की सच्चाई जान सकते हो'' (मरोनी 10:4–5) ।

यह वादा निश्चित है । लाखों लोगों ने प्रार्थना के विषय में उस आशीष को प्राप्त कर इस शानदार वादा की परिक्षा की और साबित किया है जिसने उनके जीवनों को आनंद और असीम खुशी से भर दिया है । परमेश्वर का इरादा और इच्छा जानने के लिए यह वादा हम सब की प्रार्थनाओं पर लागू होता है । हम इसे लागू कर सकते हैं जब कभी हम परमेश्वर के सेवक से सलाह को प्राप्त करते हैं जिसे हमें निर्देशन देने के लिए अधिकृत किया गया है । उदाहरण के लिए, हम इस पर निर्भर कर सकते हैं जब हम जनरल सम्मेलन के उपदेश को सुनते हैं । हम इसे लागू कर सकते हैं जब हमें परमेश्वर के जीवित भविष्यवक्ता द्वारा नियुक्त विनम्र प्रचारकों द्वारा सीखाया जाता है । यह तभी भी लागू होता है जब अपने धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष से सलाह प्राप्त करते हैं ।

क्योंकि प्रार्थना हमारे जीवनों में कार्य करती है, इसके नियम सरल हैं । सच्चाई को जानने के लिए हमें पिता से यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करनी चाहिए । हमें सच्चे हृदय से मांगना चाहिए, इसका अर्थ है हमारे भीतर ईमानदार इच्छा होनी चाहिए कि जो कुछ भी परमेश्वर हमें करने को कहेगा हमें उसे करना होगा । और हमारी सच्ची इच्छा यीशु मसीह में विश्वास से उत्पन्न होती है ।

जांचकर्ता जो बपतिस्मा और पुष्टिकरण से पहले मॉरमन की पुस्तक को पढ़ता है उसे ये आश्वासन मिलते हैं कि यह पुस्तक सच्ची है और जोसफ स्मिथ ने परमेश्वर की शक्ति से इसका अनुवाद किया है । गिरजे का सदस्य बन जाने पर, हमें पवित्र आत्मा हमारे साथी के रूप में अन्य सच्चाइयों की पुष्टि करती है । तब, जो कुछ भी हम विश्वास में प्रार्थना करते हैं, हम आशा कर सकते हैं कि पवित्र आत्मा गवाही देगी कि यीशु ही मसीह है, कि परमेश्वर पिता जीवित है, और कि वे हम से और स्वर्गीय पिता के सभी बच्चों से प्रेम करते हैं ।

मॉरमन की पुस्तक में इसका यही एक कारण यह वादा है कि हमारे हृदयों में उदारता होगी जब पवित्र आत्मा गवाही देता है कि यीशु ही मसीह है: ''यदि कोई मनुष्य हृदय से दीन और नम्र है, और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा अंगीकार करता है कि यीशु ही मसीह है, तो उसमें उदारता होनी चाहिए'' (मरोनी 7:44) ।

प्रत्येक उपवास रविवार को आत्मिकरूप से विकास करने का महान मौका होता है । उपवास रविवार हमें अलमा और मुसायाह के बेटों के अनुभवों के समीप आने में मदद करता है, जिन्होंने अनंत सच्चाई जानने के लिए प्रार्थना की और उपवास रखा ताकि वे लमनाइयों को शक्ति, अधिकार, और प्रेम से सीखा सकें (देखें अलमा 17:3, 9) ।

उपवास रविवार को हम प्रार्थना और उपवास को जोड़ते हैं । गरीब को आशीष देने के लिए, हम धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष को कम से कम दो भोजन के मूल्य के बराबर उपवास भेंट देते हैं । हमारे विचार और प्रार्थनाएं उद्धारकर्ता और उनकी ओर होती हैं जिन्हें वह चाहता है कि हम उनकी आत्मिक और संसारिक जरूरतों की तरफ ध्यान देकर सेवा करें ।

इस प्रकार हमारी प्रार्थनाएं और इच्छाएं उद्धारकर्ता की प्रार्थनाओं और इच्छाओं के समान हो जाती हैं जब हम उपवास रखकर अधिक दीन, सीखाये जाने योग्य, और प्रेम करने वाले बन जाते हैं । और जैसा उसने किया था, हम अपने लिए पिता की इच्छा जानने और इसे करने के लिए प्रार्थना करते हैं ।

इस संदेश से शिक्षा

अध्यक्ष आइरिंग सीखाते हैं कि प्रार्थना और उपवास हमें ''अनंत सच्चाई जानने'' में मदद कर सकते हैं । विचार करें जिन से आप भेंट करते हैं उनकी गवाहियों को कहां मजबूत करने की जरूरत है और उस विषय पर पाठ तैयार करें । उदाहरण के लिए, यदि जिस व्यक्ति से आप भेंट करते हैं उसका नजदीकी मित्र या परिवार के सदस्य की मृत्यु हो गयी है, तो अनंत परिवार और मृत्यु के बाद जीवन पर चर्चा करने पर विचार करें । आप उनके साथ उपवास रखने की पेशकश कर सकते हो ताकि उन्हें इस सिद्धांत की गवाही प्राप्त करने में मदद मिले ।

युवा

प्रार्थना करने से पहले तैयारी करें

अध्यक्ष आइरिंग याद दिलाते हैं कि प्रार्थना ''परमेश्वर और उसके बच्चों के बीच में दो-तरफा बातचीत होती है'' ।

प्रार्थना करने के लिए तैयारी करने से यह दो-तरफा बातचीत संभव हो सकती है । हर दिन प्रार्थना करने की तैयारी के लिए आप कुछ मिनट अपनी दैनिकी का उपयोग करने में कर सकते हैं । उन लोगों की जिन्हें आपकी प्रार्थना की जरूरत है, उन प्रश्नों की जिनका उत्तर आप चाहते हैं और उन आशीषों की आप सूची बना सकते हैं जिसके लिए आप स्वर्गीय पिता को धन्यवाद देना चाहते हैं । फिर स्तुतिगीत गाकर या धर्मशास्त्र से कुछ आयतें पढ़कर आत्मा को आंमत्रित कर सकते हैं । जैसे आप प्रार्थना करते हैं, ध्यान दें पवित्र आत्मा आप से क्या कहलवाना चाहती है, और अपनी अनुभूतियों और विचारों पर ध्यान दें (देखें सिऔरअ 8:2–3) । अपने अनुभवों को अपनी दैनिकी में लिखने और जो उत्तर आपको मिलते हैं उन पर विचार करें । अपनी प्रार्थनाओं का मूल्यांकन करने और पवित्र आत्मा को पहचानने में मदद के लिए आप *Preach My Gospel: A Guide to Missionary Service* के पृष्ठ 95–97 पर दी गतिविधियों का भी उपयोग कर सकते हैं ।

बच्चे

प्रार्थना सैंडवीच

आप कैसे जानेंगे क्या कहना है जब आप प्रार्थना करते हैं ? आप यह कहकर प्रार्थना आरंभ कर सकते हो, ''प्रिय स्वर्गीय पिता,'' और यह कहकर प्रार्थना समाप्त कर सकते हो, ''यीशु मसीह के नाम में, आमीन'' । इनके बीच में आप क्या कहते हैं यह आपकी इच्छा अनुसार है, ठीक उसकी प्रकार जैसे सैंडवीच के बीच में क्या डालना है होता है ।

एक सैंडवीच का चित्र बनाएं, बहुत सारी भिन्न-भिन्न चीजों को चुनें जो आप सैंडवीच के बीच रखना चाहते हैं । ब्रैड के स्लाइस के बीच प्रत्येक परत पर जिस के लिए प्रार्थना करना चाहते हैं उसे लिखें । आप आशीषों के लिए ''धन्यवाद'' कह सकते हो, अपने चिंताओं के बारे में बोल सकते हो, आशीषें मांग सकते हो, या प्रश्नों के प्रार्थना कर सकते हो ।

आप अपने सैंडवीच के चित्र को काट सकते हो । अपने कमरे में इसे लटकाएं ताकि यह आपको याद दिलाने में मदद सके कि आप अपनी प्रार्थनाओ में किन बातों को कह सकते है ।

© 2014 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/14 । अनुवाद अनुमतिः 6/14 । *First Presidency Message, October 2014* का अनुवाद । Hindi । 10870 294

यीशु मसीह का दिव्य मिशन : जीवन की रोटी

प्रार्थनापूर्वक इस सामाग्री को पढ़ें और क्या बांटना है को जानने के लिये खोजें । उद्धारकर्ता का जीवन और सेवाकाई उसमें कैसे आपके विश्वास को बढ़ाता और उन्हें आशीष देता है जिनका आप भेंट करने वाला शिक्षका के द्वारा ध्यान रखते हैं ? अधिक जानकारी के लिए lds.org *पर जाएं*

विश्वास, परिवार, सहायता

भेंट करने वाला शिक्षा संदेश का यह उद्धारकर्ता के सेवाकाई के पहलुओं का वर्णन करने की श्रृंखला का एक भाग है ।

यीशु ने कहा था, ''जीवन की रोटो जो स्वर्ग सी उतरी, मैं हूं । यदि कोई इस रोटी से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा'' (यूहन्ना 6:51) । ''यीशु, अपने शिष्यों को, सीखाता है कि हमें इस रोटी — मदद और पोषण — जिसकी हमें उस विशेष दिन जरूरत होती है, के लिए प्रतिदिन परमेश्वर की ओर ध्यान लगाना चाहिए,'' बारह प्रेरितों की परिषद के एल्डर डी. टाड क्रिस्टोफरसन ने कहा था । ''प्रभु का निमंत्रण ... प्रिय परमेश्वर के विषय में बताता है, जिसे अपने बच्चों की प्रतिदिन की आवश्यकताओं का ध्यान है, छोटी से छोटी ही क्यों न हों, और एक एक कर उनकी मदद करने के लिए उत्सुक रहता है । वह कहता है कि हमें विश्वासी होकर मांगना चाहिए क्योंकि ''वह बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उसको दी जाएगी' (याकूब 1:5) ।''[1] जैसे हम समझते हैं कि यीशु मसीह हमारी जरूरतों को पूरा करेगा, हम अपनी आत्मिक पोषण के लिए उसकी ओर जाएंगे ।

बारह प्रेरितों की परिषद के एल्डर जैफ्री आर. हॉलैंड हमें निमंत्रण देते हैं कि ''मसीह के आरंभिक शिष्यों के साहसिक काम में जुड़ना चाहिए जिन्होंने जीवन की रोटी की इच्छा की थी—–वे वापस नहीं लौटे लेकिन उसके निकट आए, उसके साथ बने रहें, और जो पहचान गए थे कि सुरक्षा और उद्धार और किसी के पास नहीं चाहें वे कहीं भी चले जाएं ।''[2]

धर्मशास्त्रों से

यूहन्ना 6:32–35; अलमा 5:34;
3 नफी 20:3–8

हमारे इतिहास से

यीशु मसीह ने 4000 से अधिक भीड़ को उपदेश दे रहे थे । तीन दिन के बाद, उसने अपने शिष्यों से कहा : ''मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि यह ... खाने को कुछ नहीं :

''और यदि मैं उन्हें भूखा घर भेज दूं, तो मार्ग में थक कर रह जाएंगे । ...

''और शिष्यों ने उसको उत्तर दिया, कि यहां जंगल में इतनी रोटी कोई कहां से लाएं कि ये तृप्त हों ?

''और [यीशु] ने उन से पूछा, तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं ? उन्होंने कहा, सात ।''

तब मसीह ने ''वे सात रोटियां ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और अपने शिष्यों को देता गया कि उनके आगे रखें; ...

''और उनके पास थोड़ी सी छोटी मछलियां भी थीं; और उसने धन्यवाद करके उन्हें भी लोगों के आगे रखने की आज्ञा दी ।

''सो वे खाकर तृप्त हो गए और शेष टुकड़ों के सात टोकरे भरकर उठाए ।'' (देखें मरकुस 8:1–9 ।)

विवरण

1. D. Todd Christofferson, "Recognizing God's Hand in Our Daily Blessings," *Liahona,* जन. 2012, 25 ।
2. Jeffrey R. Holland, "He Hath Filled the Hungry with Good Things," *Liahona,* Jan. 1998, 76 ।

विचार करें

जब हम मसीह के निकट आते हैं, वह कैसे हमारा पोषण करता है ?

© 2014 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/14 । अनुवाद अनुमतिः 6/14 । *Visiting Teaching Message, October 2014* का अनुवाद । Hindi । 10870 294